

## सर्चाई प्रतररूप और मानसून

### चरचा में क्यों?

हाल ही में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मुंबई ने पता लगाया है, कर् सर्चाई प्रतररूप मानसूनी वर्षा को प्रभावति कर रहा है ।

### प्रमुख बढि:

- पहली बार भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मुंबई के शोधकर्त्ताओं ने बताया है कर् बेहतर सर्चाई नीतिके माध्यम से वायुमंडलीय प्रतर्क्रिया के साथ ही भारत में मानसूनी वर्षा को तीव्र कर्ता जा सकता है ।
- शोधकर्त्ताओं ने बताया कर्, उत्तर-पश्चिमी भारत में गर्मियों में मानसूनी वर्षा में परविरतन और सर्तिंबर महीने में मध्य भारत में अत्यधिक वर्षा को सर्चाई प्रतररूप प्रभावति कर रहा है ।
- सर्तिंबर के महीने में कृषि भूमि अत्यधिक सर्चिति होती है और फसलें परपिक्व होती हैं, जसिके परिणामस्वरूप वायुमंडल में अधिक नमी वदियमान रहती है ।
- इससे पहले भी कई अध्ययनों से पता चला था कर् सर्चाई भारतीय ग्रीष्मकालीन मानसून को प्रभावति करती है ।
- लेकनि IIT मुंबई, नॉर्थवेस्ट पैसफिक नेशनल लेबोरेटरी ( Pacific Northwest National Laboratory ) और ओक रिजि नेशनल लेबोरेटरी (Oak Ridge National Laboratory ) के शोधकर्त्ताओं ने पहली बार स्पष्ट कर्ता कर् सर्चाई प्रबंधन में कर्सी बदलाव से वातावरण में नमी की मात्र में भी बदलाव होता है ।

### भूमि-सतह मॉडल:

- सर्चाई की मानसूनी वर्षा की भूमिका के रूप में शोधकर्त्ताओं ने भूमि-सतह मॉडल का एक मॉड्यूल वकिसति कर्ता है । यह भारत की स्थानीय मटिटी, सर्चाई और कृषि पैटर्न को ध्यान में रखकर तैयार कर्ता गया है ।
- सामान्यतः मटिटी में नमी कम होने के कारण सर्चाई की जाती है लेकनि भारत में अनर्धित्तरति सर्चाई होती है ।
- भारत का लगभग 50% फसल क्षेत्र धान से आच्छादति है, जहाँ खेतों को जलमग्न स्थिति में रखा जाता है । इसलिये धान के फसल क्षेत्रों में मानसूनी वर्षा का प्रतररूप अन्य जगहों से भिन्न होता है ।
- सर्चाई प्रतररूप के साथ-साथ तापमान और वाष्पीकरण भी मानसून को प्रभावति करता है ।

वातावरण की प्रतर्क्रिया के अध्ययन में मटिटी की नमी को उपेक्षति नहीं कर्ता जाना चाहयि । भारत में उपयोग कर्ता जाने वाले कर्सी भी भूमि-सतह मॉडल हेतु भारत की स्थानीय सर्चाई और कृषि प्रणाली को ध्यान में अवश्य रखना चाहयि ।

### स्रोत: द हट्टि